सुतौ चंद सौ देष्यौ ॥ ४ ॥ टीका ॥ धीरा ना
इका कौ बचन सषी प्रति ज्यौं ज्यौं कुल्ला
स सौ जो आनंद सौ ॥ के सब कहै हैं ॥ बि
लास सुष ताकौ निवास ऐसौ जो नायक
हियेमें अव रष्यौ ॥ सो नायक के हियेमें
न षूरषा अन्य स्त्री को लगाई लषी त्यौं
त्यौं मेरे हियेमें कछू कंप बढ्यौ तब भ्रम
भीत भयौ सो कैसे तो ऊर पी को भ्रम भयौ कै
सौ तब बिसु ष्यौ ॥ सो सीत को भ्रम भयौ है
सषी मेरे नैन सरोज सौ कमल रूपी है ॥
अरु मुद्रित सौ मुंदि गये बरही सो जो राब
री ॥ सो यन सो चलष्यौ ते ताके ह्यौ है ॥ मो
हन को मुष अरबिंद जो कमल सो है ॥ सो
तो चंद मा री षाट ष्यौ ॥ नायका न षरे षाद
षिवक्रोक्ति सो चंद्रमा सो मोहन को मुष
कलौकित कह्यौ ॥ अ प अ मो त्कि ल छ